- डॉ॰ मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे॰ के॰ कॉलेज

स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) तृतीय खण्ड
(अष्टम पत्र – साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना)

भारतीय साहित्य सिद्धांत – रस

रस का साधारण अर्थ होता है - आनन्द प्रदान करने वाला स्वाद। 'आस्वाद्यते इति रसः' अर्थात् जो आस्वादित किया जाए, रसमय आस्वाद। रस का सर्वप्रथम वर्णन भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' के छठे एवं सातवें अध्याय में किया है –

"विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगात् रसनिष्पत्तिः"

अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। इस सूत्र में आए पारिभाषिक शब्द -
'विभाव' - का अर्थ होता है रसानुभूति के कारण। हृदय में स्थित स्थायी भाव जिन उपादानों के कारण आस्वादन योग्य बनते हैं उन्हें विभाव कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं - आलम्बन और उद्दीपन। यदि किसी को देखकर मन में कोई भाव उत्पन्न होता है वहाँ आलम्बन विभाव होता है। जिसे देखा गया वह आलम्बन हुआ। जहाँ कोई व्यक्ति या स्त्री अपने व्यवहार से किसी के अन्दर स्थायी भाव को जागृत कर दे वहाँ, वह व्यवहार ही उद्दीपन विभाव है। दो पात्रों के बीच यदि श्रृंगार चेष्टाएँ हो रही हैं और उसे देखकर या उनका वर्णन पढ़कर सहृदय के हृदय में भी रति भाव जागृत होता है और वह श्रृंगार रस का आस्वादन करता है तो सहृदय पाठक के लिए श्रृंगार चेष्टाएँ करने वाले पात्र श्रृंगार के आलम्बन हैं।

'अनुभाव' - भाव उत्पन्न होने पर उसके अनुरूप 'आश्रय' में कुछ शारीरिक चेष्टाएँ होती हैं। इन चेष्टाओं से भाव का अनुभव होता है। उन शारीरिक चेष्टाओं को ही अनुभाव कहते हैं। अनुभाव दो प्रकार के होते हैं – (i) सात्विक (ii) कायिक। सात्विक अनुभाव वे हैं जो सहज भाव से बिना प्रयत्न के भाव उत्पन्न होने के साथ ही उत्पन्न हो जाते हैं। इनकी संख्या आठ है - स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वर भंग, वेपथु (कम्प) वैवर्ण्य (मुख का रंग बदलना), अश्रु, प्रलय (अचेत हो जाना)।

Scanned with CamScan

कायिक अनुभाव वे हैं जिन्हें प्रयासपूर्वक प्रकट किया जाता है। जैसे - भ्रू विक्षेप, कटाक्ष, इंगित करना आदि।

व्यभिचारी भाव (संचारी भाव)

जो सभी रसों में विचरण करते हैं और रसों को पुष्ट करके आस्वाद योग्य बनाते हैं, उन्हें व्यभिचारी या संचारी भाव कहते हैं। इनकी संख्या लगभग 33 होती है। जैसे - लज्जा, हर्ष, विषाद, त्रास, ग्लानि, चिंता, शंका, असूया (दूसरे के वैभव का विलास), अमर्ष (निन्दा), मोह, गर्व, औत्सुक्य (मनोबांछित वस्तु न मिलने पर अत्यन्त होना) उग्रता, चपलता (चित की अस्थिरता), आलस्य, निद्रा, स्वप्न, स्मृति, मरण आदि।

भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में स्थायी भावों की संख्या आठ निर्धारित किए हैं — (1) रति (2) हास (3) शोक (4) क्रोध (5) उत्साह (6) भय (7) जुगुप्सा (घृणा), (8) विस्मय।

आचार्य विश्वनाथ की परिभाषा

आचार्य विश्वनाथ रस को काव्य की आत्मा मानते हैं। वे रस की परिभाषा देते हुए लिखते हैं -

"विभावानुभावेन व्यक्तः संचारिणातथा।
रसतामेति इत्यादि स्थायीभाव सचेत सामू॥"

अर्थात् विभाव, अनुभावों द्वारा रति आदि स्थायी भाव, जब सहृदय लोगों के हृदय में व्यक्त होता है, उस दशा को रस दशा कहते हैं।

महाकवि देव के अनुसार

देव ने अपने 'भाव-विलास' में 'रस' के संदर्भ में लिखा है — "जो विभाव अनुभाव अरु, विभचारिनु कारि होई।
तिथि की पूजन वासना, सुकवि कहत रस सोई॥"

अर्थात् भाव, विभाव एवं व्यभिचारी भाव के कारण जब स्थायी भाव की पूर्ण दशा हो जाती है, वह रस दशा कहलाती है।

स्थायी भाव — रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय, निर्वेद (2) वत्सल - वात्सल्य, भगवद्विषय - भक्ति

रस — शृंगार, हास, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शांत

Scanned with CamScanner